Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 06, June - 2024

DOIs:10.2018/SS/202406007 --:-- Research Paper / Article / Review

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन

[1] डॉ० राजीव अग्रवाल, [2] सौरभ कुमार गौतम, [3] शिल्पी गुप्ता

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
[2]सहायक अध्यापक, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
[3]शोध छात्रा, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
Email – [1]rajeevadc@gmail.com, [2]gautamsaurabh123s@gmail.com, [3]NA

शोध सार: *संगीत प्राचीन काल से ही मानव संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी इसका गहरा प्रभाव होता है। संगीत शिक्षा का महत्व विशेष रूप से बच्चों और किशोरों के विकास के संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थी अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण चरण से गुजरते हैं, जहां शैक्षणिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल का विकास प्रमुख होता है।इस शोध का उद्देश्य है संगीत प्रवीणता के महत्व को उजागर करना और शिक्षा प्रणाली में संगीत शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने के सुझाव देना। इसके माध्यम से यह अध्ययन उन नीतियों और कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना चाहता है जो विद्यार्थियों के समग्र विकास में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता प्रदान करते हैं।*

मूल शब्द: *संगीत, प्रवीणता, माध्यमिक विद्यार्थी, अध्ययन।*

1. प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति जो विश्व की महानतम एवं प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है की "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" नींव की अवधारणा पर लंबित है। इस संस्कृति की अखंडता की भावना को जीवित रखना ही "वसुधैव कुटुम्बकम" हमारा मुख्य लक्ष्य रहा है। संस्कृति के साथ शिक्षा ही अब प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। शिक्षा जहाँ सतह हमारी बौद्धिक ज्ञान को परिष्कृत करती है वही कलाएं हमारे व्यावहारिक ज्ञान एवं सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति में अभिवृद्धि करती है। शिक्षा अर्जन के क्रम सांस्कृतिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। वस्तुतः संस्कृति साध्य है और शिक्षा उसको प्राप्त करने का सशक्त माध्यम शिक्षा का अर्थ बहुत व्यापक है। इसकी परिधि हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को अपने अंदर समेटे हुए है। शिक्षा और इसके प्रयोजनों को समझने की एक लंबी शृंखला है| बस जिसे संगीत शिक्षा से सह संबंध स्थापित करते हुए समझने की आवश्यकता है एक और जहाँ शिक्षा व्यक्ति के विकास में सहायक सामग्री समझी हुई दूसरी ओर राष्ट्र, समाज और विश्व के संदर्भ में उसकी सार्थकता को खोजा गया है। यही अभिप्राय संगीत शिक्षा के साथ लागू होता है संगीत न जहाँ विभिन्न माध्यमों से समाज को शिक्षित किया है वहीं समयानुसार उसकी शिक्षा के अध्ययन की रूपरेखा भी राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित हुई है।

मानव जाति के विकास की आधारशिला शिक्षा को माना जाता है। एक सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली ही मानव को सुसंस्कृत, संवेदनशील एवं विवेकशील बनाने के साथ विचारवान गुण का प्रस्फुटन करती है। किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा एवं अपरिहार्य तारक के रूप में सामने आती है।

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष को शिक्षा के सबसे केंद्र के रूप में जाना जाता रहा है। केवल भारतवर्ष ही नहीं अनेक देश के लोग शिक्षा प्राप्त करने आते रहे हैं। शिक्षा और संस्कृति के लिए पूरे विश्व में सम्मान के साथ लिया जाने वाला नाम नालंदा, तक्षशिला, और प्रयाग ने ऐसे ही प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर ली। इन शिक्षा के केन्द्रों में मिस्र, यूनान, चीन, श्रीलंका, इंडोनेशिया आदि विद्यार्थियों ने शिक्षा ग्रहण कर ऊंचाईयों को प्राप्त किया| शिक्षा की भारतीय पद्धति को हमेशा एक आदर्श शिक्षा प्रणाली की संज्ञा दी गई। शिक्षा जगत से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होना चाहिए जिसमें संगीत की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

संगीत का शैक्षिक स्वरूप गुरु शिष्य परंपरा के रूप में विकसित हुआ| यही गुरु शिष्य परंपरा आगे पीढ़ी दर पीढ़ी चल कर घराना पद्धति की दूरी को तय करती हुई शैक्षणिक संस्थान के रूप में वर्तमान में स्थापित हुई| आधुनिक विज्ञानवादी युग में संगीत शिक्षा का विधिवत् उपागम एक आवश्यकता है क्योंकि संगीत अपने आप में अत्यंत गहन एवं विस्तृत आध्यात्मिक भावना से परिपूर्ण इस निष्पत्ति मैं सक्षम एक ऐसी कला है जिसका क्षेत्र असीमित है| संगीत का आध्यात्मिक पक्ष जहाँ एक ओर मनुष्य की आंतरिक वृत्तियों से परिष्कृत मानव की आत्मा को दिव्यात्मक रूप से प्रकाशित करने पर बल देता है| वही उसका शास्त्रीय पक्ष संगीत कला के बाह्य सौंदर्य का मूल्यांकन कर उसमें निहित दिव्यात्मक रूप को प्रकाशित करके संगीत की इस निष्पत्ति विषयक प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। इन सब तत्वों से परे संगीत का सामान्य प्रभाव एवं प्रयोग मनुष्य के दैनिक जीवन में समाविष्ट होकर उसके दैनिक जीवन का ही एक अंग बन जाता है। अतः सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संगीत को व्यवस्थित विकसित व परिष्कृत करने की दृष्टि से ही संगीत की शिक्षा व्यवस्था महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। संगीत एक क्रियात्मक कला है जिसमें निपुणता बिना शिक्षा के प्राप्त नहीं की जाती है साथ ही यह एक ललित कला भी है जिसका आंतरिक एवं बाहरी रूप से विकास शिक्षा के बिना आधारहीन है अस्तु कलात्मक, ज्ञानात्मक व रचनात्मक दृष्टिकोण से इच्छित फल की प्राप्ति हेतु संगीत शिक्षण की महती आवश्यकता है।

2. संगीत की व्युत्पत्ति

प्राचीन ग्रंथों में संगीत को गायन, वादन एवं नृत्य का शीघ्र रूप माना है जो कि सारंगदेव के संगीत रत्नाकर ग्रंथ में दिए गए श्लोक से स्पष्ट है:

"गीतम् वाद्य नृत्यं च संगीत मुच्यते"

वैसे गायन, वादन एवं नृत्य का एक दूसरे से स्वतंत्र अस्तित्व है। परन्तु गायन के साथ स्वर वाद्य जैसे सारंगी अथवा वायलिन एवं अवनद्ध वाद्य तबला अथवा पखावज संगीत के रूप में प्रयोग होते हैं। प्राचीन समय में इन तीनों का प्रदर्शन एक साथ किया जाता था। सामान्य संगीत को शास्त्रीय संगीत ही समझा जाता है परन्तु संगीत के अंतर्गत संगीत की सभी विधाएं- शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगी, सुगम संगीत एवं लोक संगीत आते हैं।

3. संगीत के तत्व

स्वर एवं लय संगीत के मूल तत्व हैं। स्वर एवं लय की सुंदर संयोजन को ही संगीत कहते हैं। विभिन्न स्वर समूहों के प्रयोग से संगीत की रचना होती है। संगीत को समझने के लिए स्वर एवं लय को समझना आवश्यक है। स्वर से प्राप्त होता है एवं लय पूरी सृष्टि में विद्यमान है। अतः स्वर एवं लय दोनों प्रकृति में विद्यमान है। विद्वानों द्वारा प्रकृति से स्वर एवं लय को पहचान कर संगीत की रचना की गई।

4. संगीत की विधाएं

शास्त्रीय संगीत

ऐसा संगीत जिसका शास्त्र निश्चित अर्थात्: शास्त्र पर आधारित वह संगीत जिसमें राग व लय ताल शास्त्र के नियमों के आधार पर स्वर एवं विलय का सुंदर संयोजन कर राग को गाया अथवा वृद्धों पर प्रस्तुत किया जाता है शास्त्रीय संगीत कहलाता है। इसमें रागों के नियमों का पालन करना आवश्यक है तथा रंजकता हेतु नियमों को शिथिल करने का अधिकार नहीं होता है । यह नियम स्थिर होते हैं एवं किसी भी प्रदेश या देश में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग समान होता है।

उप शास्त्रीय संगीत

इस संगीत में पूर्ण शास्त्र का प्रयोग नहीं है। संगीत का आधार तो शस्त्र है परंतु उसमें राग शास्त्र के नियमों का कठोरता से पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें राग के नियमों को भाव रस एवं माधुर्य हेतु शिथिल किया जा सकता है। उपशास्त्रीय संगीत हेतु मुख्यतः राग पीलू, कॉफी, देश, समाज, पहाड़ी, तिलंग, भैरवी आदि रागों प्रयोग किया जाता है।

सुगम संगीत

यह संगीत पूर्णतया भाव प्रधान है। इसमें हिंदी के कवियों एवं उर्दू के शायरों द्वारा रचित रचनाओं के स्वर-लय में बांधकर गाया जाता है। गीत भजन एवं गज़ल सुगम संगीत की श्रेणी में आते हैं। संगीत भक्ति का माध्यम रहा है अतः मुस्लिम धर्म की नात-कव्वाली एवं हिंदू धर्म की कीर्तन गायन शैली भी सुगम संगीत की श्रेणी में ही आएंगे।

लोक संगीत

ग्रामीण परिवेश में लोक संगीत उन्मुक्त वातावरण में जन्म लेता है। लोक संगीत में मुख्यतः नृत्य एवं गाना बजाना साथ-साथ होता है। लोक संगीत में प्रदेश विशेष की प्राकृतिक सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को परिचय प्राप्त होता है

एवं गीतों का विषय भी इन्हीं पर आधारित होता है। लोक संगीत की धुनो ने शास्त्रीय संगीत उप शास्त्रीय संगीत को प्रभावित किया है। पहाड़ की धुन पर आधारित पहाड़ी राग एवं राजस्थान क्षेत्र का मांड इसके उदाहरण हैं।

5. संगीत के अंग

संगीत सम्यक एवं गीत से मिलकर बना है। संगीत= सम्यक + गीत। सम्यक का अर्थ है- भली भाँति एवं गीत का अर्थ है- गाना अर्थात भली भाँति गाना संगीत है। संगीत के अंतर्गत गायन, वादन एवं नृत्य तीनों आते हैं यही संगीत के अंग है।

गायन

गायन को कंठ संगीत भी कहा जाता है, अर्थात् कंठ के द्वारा संगीत उत्पन्न करना। गायन, स्वर, लय एवं पद के संयोग से बनता है। पद्य अथवा काव्य का गायन में मुख्य स्थान है। गायन की शैली के अनुसार पद्य अथवा काव्य का चयन किया जाता है। शास्त्रीय गायन विद्या के अंतर्गत ख़्याल एवं ध्रुपद गायन शैली आती है।

ख़्याल

ख्याल का अर्थ है कल्पना अतः इसमें राग के नियमों के अंतर्गत विभिन्न स्वर समूहों की लय व ताल के साथ कल्पना कर राग का स्वरूप स्थापित किया जाता है। ख्याल गायन में विलंबित मध्य एवं द्रुत लय की रचनाएं गायी जाती है| राग के भाव व रस के आधार पर पद्य का चयन कर रचनाएं गाईं जाती है। जिसका अलंकरण आलाप, बोल आलाप, बोल तान, सरगम एवं तीनों के प्रकार से किया जाता है विलंबित लय की रचना का बड़ा ख्याल रखा जाता है।

बड़े ख्याल हेतु एकताल, तिलवाड़ा, झुमरा आदि तालों का प्रयोग किया जाता है। मध्य व द्रुत लय की रचना अथवा बंदिश को छोटा ख्याल कहा जाता है। मध्य लय एवं द्रुत लय की रचना तीनताल, एकताल, आड़ा चारताल आदि तालों में की जाती है।

ध्रुपद

ध्रुपद गायन शैली ख्याल से प्राचीन है| ध्रुपद के बाद ही ख्याल का जन्म हुआ यह गायन शैली जोरदार एवं गंभीर है| पखावज वाद्य ध्वनि तबले की अपेक्षा गंभीर होती है इसलिए ध्रुपद गायन हेतु पखावज संगीत किया जाता है। ध्रुपद की रचना पखावज पर बजने वाली तानों का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि इसके स्थान पर दुगुन, तिगुन, चौगुन एवं कठिन लयकारी का प्रयोग कलाकार की सामर्थ्य के अनुसार किया जाता है। इस गायन शैली में ताल के साथ रचना प्रस्तुत करने से पहले नोम-तोम शब्दों के माध्यम से विलंबित मध्य एवं द्रुत लय में आलाप प्रस्तुत किया जाता है।

ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती एवं होली

उप शास्त्रीय गायन की विधा में इन शैलियों का प्रमुख उद्देश्य शब्दों के भावों को स्वर एवं लय के विभिन्न प्रयोग द्वारा प्रकट करना है। ठुमरी विलंबित लय में एवं दादरा मध्यलय में गाया जाता है ठुमरी के बाद ही दादरा गाने की परंपरा है एवं दादरा वियोग एवं श्रृंगार रस के लिए होता ह। ठुमरी हेतु दीपचंदी, जत, पंजाबी आदि तालों का प्रयोग किया जाता है एवं दादरा हेतु कहरवा एवं दादरा ताल प्रयोग की जाती है। दादरा एक ताल का नाम है।

कजरी एवं जयती लोक शैली की विधा है जिसको परिष्कृत कर दादरा की भाँति गाया जाता है। कजरी वर्षा ऋतु में एवं चैती पूर्वी अंचल में क्षेत्र माह में गाई जाती है। होली गायन फाल्गुन माह में होली पर्व के अवसर पर गाया जाता है एवं इसका गायन ठुमरी की भांति किया जाता है।

वादन

भारतीय वादियों को प्राचीन ग्रंथों भारत की नाट्यशास्त्र एवं शारंगदेव के संगीत रत्नाकर आदि में चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है-

1.तत् वाद्य

2.सुषिर वाद्य

3.अवनद्ध वाद्य

4.घन वाद्य

नृत्य

पद अथवा पैर शारीरिक अंग एवं भाव भंगिमाओं के द्वारा भाव प्रकट करने को नृत्य कहा जाता है। नृत्य के अंतर्गत शास्त्रीय नृत्य एवं भाव नृत्य दोनों ही स्वरूप पाए जाते हैं शास्त्रीय नृत्य मैं नृत्य की रचनाओं को पद की थाप अंग संचालन एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। शास्त्रीय नृत्य के अंतर्गत कत्थक, कथकली, उड़ीसी, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कुचीपुड़ी आदि नृत्य आते हैं। भाव नृत्य में पद का भाव नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता ह। इसके अंतर्गत ठुमरी पर भाव, भजन एवं गज़ल पर भाव, नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है फिल्मों में होने वाला नृत्य भी भाव नृत्य के अंतर्गत ही आएगा। किसी कथानक का चित्रण,नृत्य के माध्यम से करना ही भाव नृत्य ही है।

6. औपचारिक शिक्षा में संगीत का स्वरूप :

प्राथमिक स्तर

संगीत विषय की शिक्षा सामूहिक शिक्षा पद्धति का अंग है। आज प्राथमिक स्तर पर संगीत शिक्षा का स्वरूप 'हॉबी-क्लासेज' के रूप में देखने को मिलता है। जिसमें बच्चों को प्रमाण गीत, देशभक्ति गीत, प्रार्थना अधिक से अधिक अलंकार सिखा दिए जाते हैं अर्थात् बच्चों के मनोरंजन तक ही वह सीमित है।

माध्यमिक स्तर

सरकारी विद्यालयों में संगीत, तीसरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक कला-शिक्षा विषय के रूप में है। यह विषय संगीत चित्रकला व नाट्य कला को संयुक्त करके बनाया गया है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की एक ऐसी अवस्था है जो की भावनाओं, संवेगों, कल्पनाओं से परिपूर्ण माध्यमिक शिक्षा में संगीत विषय कुछ वर्षों कक्षा 9 से एक ऐच्छिक विषय के रूप में था।

उच्च शिक्षा स्तर

संगीत एक सागर है जिसकी गहराई की माप नहीं है जितना सीखें उतना ही कम है इस स्तर पर छात्रों को नई बंदिशें बनाने और हर शैली व गायकी की सूक्ष्म बातों से परिचित होने के साथ-साथ किसी एक में विशेषता प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करना विश्वविद्यालय की होती है। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लोक संगीत, रवींद्र संगीत, दक्षिणी संगीत की ओर भी ध्यान दिया जाता है।

7. समस्या कथन :

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन:बांदा जनपद के विशेष संदर्भ में ।

8. परिकल्पना :

यू०पी० बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों की संगीत प्रवीणता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9. न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में सरस्वती बालिका इंटर कॉलेज, बांदा में अध्ययनरत कक्षा-10 की 25 छात्राओं तथा नटराज संगीत संस्थान, बांदा में मध्यमा (द्वितीय वर्ष) में अध्ययनरत 25 छात्राओं का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से किया गया।

10. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रयोगात्मक संगीत प्रवीणता समूह साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार में 15-15 प्रश्न विभिन्न पाठ्यक्रमों के अनुसार यूपी बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति से लिए गए तथा जिंस प्रकार का प्रदर्शन छात्राओं द्वारा दिया गया उसको सामान्य/अच्छा/नहीं में विभाजित किया गया।

11. प्रदत्त विश्लेषण :

यूपी बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन।

12. तालिका

विद्यालय	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	't' गणना मान	स्वतंत्रांश (df)	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
नटराज संगीत संस्थान	25	64.2	8.84	10.10	48	2.000	0.05	H_0 अस्वीकृत
सरस्वती बालिका विद्या मंदिर	25	38.76	8.70					

13. निर्वचन :

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि नटराज संगीत संस्थान संगीत प्रवीणता साक्षात्कार में छात्राओं का मध्यमान 64.2 तथा सरस्वती बालिका विद्या मंदिर संगीत प्रवीणता साक्षात्कार में छात्राओं का मध्यमान 38.76 है परिगणित t- मान स्वतंत्रांश (df) 48 के लिए 10.10 प्राप्त हुआ है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर df= 48 के लिए तालिका मान 2.000 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना "यूपी बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों कि संगीत प्रवीणता में सार्थक अंतर है"। को सार्थकता स्तर .05 पर अस्वीकृत किया जाता है।

इस प्रकार नटराज संगीत संस्थान, बांदा तथा सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, बांदा की छात्राओं की संगीत प्रवीणता मैं सार्थक अंतर पाया गया तथा नटराज संगीत संस्थान की छात्राओं में सरस्वती बालिका विद्या मंदिर की छात्राओं की अपेक्षा ज्यादा प्रवीणता पायी गयी।

14. निष्कर्ष:

- सामाजिक कारकों के प्रति संगीत विषय में दोनों ही संस्थाओं के विद्यार्थियों का मत सकारात्मक है अर्थात संगीत प्रवीणता के प्रति सकारात्मक भाव प्रदर्शित करते हैं।
- मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रति संगीत प्रवीणता स्तर मैं विद्यार्थियों का दृष्टिकोण समान है। विद्यार्थियों का मानना है कि संगीत से मन शांत एकाग्र व अनुकूल रहता है क्योंकि रागों की नदी में बहकर व्यक्ति अपनी कुंठाओं से निवृत्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त वादन के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति से मनःस्थिति भी सामान्य रहती है।
- विद्यार्थियों से प्राप्त मतों की समीक्षात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि दोनों ही संस्थान के विद्यार्थी शिक्षक के व्यक्तित्व व्यवहार एवं शिक्षण को संगीत शिक्षा में महत्वपूर्ण कारण स्वीकार करते हैं।
- यू०पी० बोर्ड विद्यालयों में प्रेरक सुविधाएं अपनी सुविधा अनुरूप प्रदान करते हैं तथा प्रयाग संगीत समिति संस्थानों में प्रेरक सुविधाएँ अपनी सुविधा अनुरूप करती है। इसलिए प्रयाग संगीत समिति की तुलना में यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अधिक प्रगतिशीलता नहीं है।
- दोनों ही कक्षाओं में शिक्षक छात्र अनुपात की स्थिति कक्षा के अनुकूल है। जो ना अधिक है और न ही कम।
- प्रयाग संगीत समिति संस्थानों में प्रदत्त चक्र की अवधि 2-4 घंटे है जबकि यूपी बोर्ड विद्यालयों में क्रियात्मक कला हेतु 35 से40 मिनट तक है। इसे 1 घंटे तक किया जा सकता है।
- वर्तमान में संगीत की स्थिति के अध्ययन से यह साफ पता चलता है कि आज उन गज़ल, भजन, लोक संगीत तथा फिल्मी संगीत की ही तरह शास्त्रीय संगीत में भी जन सामान्य की रुचि है।
- विद्यालयों में संगीत की शिक्षा मात्र एक विषय के रूप में दी जा रही है जबकि प्रयाग संगीत समिति द्वारा संचालित अन्य शिक्षण संस्थान में छात्राएं रुचि के आधार पर संगीत शिक्षा ग्रहण कर रही है।
- संगीत की प्रवीणता का स्तर विद्यालयी शिक्षा से ज्यादा प्रयाग संगीत समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों में है।

15. अध्ययन के सुझाव :

- छात्राओं को गायन वादन के साथ छात्र वाद्यों का भी ज्ञान कराया जाना चाहिए।
- गायन वादन के साथ-साथ विद्यालयों में शास्त्रीय नृत्य का भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- संगीत के द्वारा आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण हेतु विद्यालय में शिक्षक को प्रयास करना चाहिए कि आसपास का वातावरण शांत व शोरगुल रहित हो तभी सच्चे स्वरों की प्राप्ति हो सकती है।
- प्रत्येक संगीत विद्या के लिए कक्षाओं की पृथक व्यवस्था होनी चाहिए।
- दृश्य सामग्री द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न करें क्योंकि दृश्य सामग्री से विद्यार्थी की श्रव्य एवं नेत्र इन्द्रियाँ सक्रिय रहती है ।
- विद्यालय प्रबंध की ओर से विभिन्न संचार माध्यमों सूची रेडियो टीवी आदि में कार्यक्रम का आयोजन एवं प्रस्तुतिकरण करवाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न ह।
- परिवार के सदस्यों द्वारा परिवार में संगीतमय वातावरण हेतु प्रयास किये जाएं जिससे विद्यार्थी को संगीत के प्रति अभिवृद्धि तथा रुचि का विकास है।
- संगीत के प्रशिक्षण हेतु समृद्ध वातावरण प्राप्त कराया जाना चाहिए।
- समाज की संस्थाओं सरकार द्वारा किए गए प्रयास भी वाद्यों के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को प्रभावित करती है इसके लिए संस्थाएँ समय-समय पर संगीत सम्मेलनों, गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन करें।
- शिक्षकों को संगीत कौशल में दक्ष बनाने हेतु समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करनी चाहिए जिससे विषय की सजगता को बढ़ाया जा सके।
- शिक्षकों की विषय सजगता हेतु प्रबंधन तंत्र को सूचना तकनीक के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन करना चाहिए।
- संगीत शिक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों की व्यवस्था होनी चाहिए।
- संगीत मानव की स्वभाविक अभिव्यक्ति है।संगीत से पठन पाठन में मन लगता हैं मन एकाग्र करने के लिए तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए संगीत की शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए।
- प्रयाग संगीत समिति द्वारा आज केवल डिग्री बांटी जा रही है। संगीत शिक्षा में कोई भी बदलाव नहीं किया जा रहा है यह आज एक व्यापार बन गया है। जिन्हें बंद करने हेतु कड़े कदम उठाने चाहिए तथा जिसपर अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया है।
- संगीत के दिखावटी मात्र प्रमाण पत्र बांटे जा रहे हैं वास्तविक रूप में संगीत की शिक्षा गुणवत्तापूर्ण नहीं है।
- गुणवत्तापूर्ण संगीत शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु प्रशासन स्तर पर कड़े कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ:

लघुशोध:

1. शर्मा, मणि (2013)। वर्तमान संगीत शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में वीणा एवं सितार की लोकप्रियता का समीक्षात्मक अध्ययन। शोध प्रबंध दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट। http://hdl.handle.net/10603/207699

पुस्तकें:

1. श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र(1999) राग परिचय, संगीत सदन प्रकाशन, प्रयागराज।
2. जोशी, उमेश(1557) भारतीय संगीत का इतिहास। संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली। http://m.bharatdiscovery.org/india
3. भारतीय संगीत सामाजिक स्वरूप एवं परिवर्तन।